

उत्तरदायित्व : जीवन समस्या या जीवनयापन कला

डॉ. चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह

मानव अपने जीवन काल में उत्तरदायित्वों को लेने से बच नहीं सकता। वास्तव में, कुछ उत्तरदायित्व तो जन्म के साथ ही आ जाते हैं और उसके बाद अनेक उत्तरदायित्व भी उनमें जुड़ते चले जाते हैं। यह कोई अद्भुत या नई बात नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति इस दुनिया में आने और अपने पालन-पोषण के लिए अपने माता-पिता का कर्जदार होता है। माता-पिता का यह एक उपकार है कि वे हमारे लिए इतना कुछ करने के बाद भी बदलें में कुछ नहीं चाहते। फिर भी यह एक उत्तरदायित्व है : एक बच्चा भी इसे अनुभव करता है और जैसे-जैसे जीवन का सफर आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे दूसरे लोगों, मित्रों समाज और यहाँ तक कि विश्व के प्रति भी अनेक उत्तरदायित्व व्यक्ति पर आ जाते हैं।

बच्चे अपनी सलाह देकर या एक अच्छा बेटा या बेटी बनकर दिखाने की अभिलाषा से जब अपने उत्तरदायित्वों को उतारने का प्रयास करता है और माता-पिता उनकी उपेक्षा कर देते हैं या उन पर ध्यान नहीं देते तो यही बात 'बचपन के विद्रोह' का सबसे बड़ा कारण बन जाती है। जब कोई अपने उत्तरदायित्व के भारी बोझ को कम करने में असफल हो जाता है तो इसके पक्ष में वह अनेक तर्क या स्पष्टीकरण देता है, जैसे –

“मेरी किसी के प्रति कोई जिम्मेदारी है ही नहीं,”

“सबसे पहले तो मेरा हक बनता है,”

“मैंने कब कहा था कि मुझे पैदा करो,”

“जीवन में जीने लायक कुछ भी नहीं है,”

और इसी तरह अनेक बातें हो सकती हैं। इसके बावजूद भी उत्तरदायित्व एकत्र होते चले जाते हैं, “उत्तरदायित्वों का बोझ” व्यक्ति को तोड़ भी सकता है यदि वह इनको पूरा करने का कोई रास्ता नहीं निकाल पाता। इस कारण अनेक व्यक्तिगत या सामाजिक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। किसी भी व्यक्ति को उत्तरदायित्वों का अधिक बोझ उठाने से रोकना चाहिए जिसको वह उतार न सके। जीवन का मार्ग तय करना कठिन होता है जब

कोई उत्तरदायित्वों के बोझ तले है या उन्हें पूरा नहीं कर पाता है। उत्तरदायित्व एक समस्या बन जाती है।

बाल्यावस्था से लेकर वयस्क तक परविश कैसे की जाये या कैसे न की जाए इस बारे में हर माता-पिता के अपने अलग ही विचार हैं लेकिन फिर भी, गलती होने पर उसके परिणाम दुःखद हो सकते हैं। यहाँ तक कि कोई अपने भविष्य को अधिक जटिल भी बन सकता है। कुछ लोग बच्चों की परविश उसी प्रकार करना चाहते हैं जिस प्रकार स्वयं उनकी हुई थी, जब कि कुछ इसके विपरीत सोचते हैं अनेक लोग ऐसा भी सोचते हैं कि बच्चों को अपने बल-बूते पर बड़ा होने दिया जाये। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होगा उसकी 'समझ', 'विकसित' हो जायेगी और स्वयं ही एक नैतिक और व्यवहार कुशल वयस्क बन जायेगा। यह बच्चों की परविश के प्रति लापरवाही है जिसे कुछ लोकप्रियता भी हासिल है। बच्चा वही करता है जो उसे उसको सिखाया गया है। ढेर सारे खिलौना या दूसरी वस्तुओं से बच्चों को 'बहलाने' अथवा उन्हें अत्यधिक नियंत्रण एवं सुरक्षा में रखने से कोई लाभ नहीं होता, इसके परिणाम अत्यन्त निराशजनक होते हैं।

आत्म-निर्भरता एवं पर्याप्त नैतिक गुणों के अभाव में वह अपना जीवन भली-भाँति नहीं जी पाएगा। ऐसा न होने पर बच्चे का जीवन अपने लिए और सभी के लिए एक बोझ बन जायेगा। बच्चे के प्रति किसी का लगाव कितना भी हो, लेकिन याद रखें कि आज यदि बच्चा अपने कदम जीने की राह पर आगे नहीं बढ़ाता तो आने वाला कल भी सुखद नहीं होगा। यदि बच्चा गलत रास्ते पर जाता है तो यह कोई दुर्घटना नहीं होगी, आज के समाज में बच्चे की असफलता के लिए सारी सम्भावनाएँ मौजूद हैं। नशीले पदार्थों का सेवन करना, स्वच्छंद संभोग इत्यादि।

सफल परविश के लिये बच्चे के साथ केवल मैत्रीपूर्ण होने का प्रयास करें। यह सत्य है कि बच्चे को मित्रों की आवश्यकता होती है। बच्चों की वास्तविक समस्याओं को जानने का प्रयास करें उनके अपने समाधानों को नकारे बिना समस्याओं को सुलझाने में उनकी मदद करने का प्रयास करें। अपने जीवन के बारे में बच्चों के विचार ध्यान से सुनें। यदि

आप बच्चे को समझा पाते हैं और उसकी सहमति हासिल कर लेते हैं, तथा इसका पालन करने के लिए उसे तैयार कर लेते हैं तो यह उसके लिए अत्यधिक मददगार साबित होगा। यह बच्चे के जीवन सामर्थ्य को बहुत अधिक प्रभावित करेगा और साथ ही आपके जीवन को भी। प्यार के बिना बच्चे जीवन में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते। और बदले में देने के लिए बच्चों में प्यार की कभी नहीं होती है। पीढ़ियों के बीच मतभेद होते हैं लेकिन असल में रूकावट इनसे पैदा नहीं होती। व्यक्ति अपने आपको बचाने के लिए झूठ का सहारा लेने का प्रयास करता है, यही कारण है जिससे पीढ़ियों के बीच दीवार खड़ी हो जाती है। बच्चे माता-पिता के साथ मतभेदों पर समझौता कर सकते हैं। लेकिन किसी भी बात पर बिगड़ने से पहले मतभेदों को सुलझाने के लिए शान्ति से बात करने का प्रयास तो किया ही जा सकता है। इस तथ्य को अनदेखा नहीं किया जा सकता कि माता-पिता को मानसिक रूप से तैयार होना होगा कि आप उसे क्या बनाने का प्रयास कर रहे हैं, यह अनेक बातों पर निर्भर करता है—

- (अ) बच्चा स्वाभाविक रूप से एवं अपनी क्षमता से क्या बन सकता है?
- (ब) बच्चा वास्तव में क्या बनना चाहता है?
- (स) आप बच्चे को क्या बनाना चाहते हैं?
- (द) और क्या साधन उपलब्ध है?

बच्चे अपनी शिक्षा एवं पालन-पोषण के लिये माता-पिता के ऋणी होते हैं, यदि माता-पिता ऐसा करते हैं। जब कि कुछ माता-पिता इतने आत्मनिर्भर होते हैं कि अपने कर्तव्य पालन के बदले वे कोई मदद नहीं स्वीकारते, लेकिन यह सच है कि एक समय ऐसा भी आता है जब माता-पिता की देखभाल करना नई पीढ़ी की जिम्मेदारी होती है। उनके साथ अच्छा व्यवहार करें। और अपना उत्तरदायित्व निभायें।

मानव हमेशा ही अपने भविष्य को नियंत्रित करने के लिए उत्सुक रहा है। जब मानव ने अपने वातावरण पर अपना आधिपत्य जमाना शुरू कर दिया है। तो सोचा कि "सच्चा ईश्वरीय वरदान" यही रहा होगा कि मनुष्य सक्षम बने। व्यक्ति जितना सक्षम होता है, उतना ही अधिक जीवित रहता है। वह जितना अक्षम होगा उतनी ही जल्दी उसका

अन्त होगा। किसी भी समाज को इसी तथ्य से परखा जाता है कि आप, आपका परिवार एवं आपके मित्र इसमें सुरक्षित रह सकते हैं या नहीं। वास्तविक आनन्द एवं सुख मूल्यवान होते हैं। यदि कोई जीवित ही नहीं रहता तो सुख और आनन्द प्राप्ति की बात करना भी व्यर्थ है।

अव्यवस्थित, भ्रष्ट एवं सामान्य रूप से अनैतिक समाज में जीवित रहने का प्रयास करना कठिन है। कोई भी व्यक्ति अथवा समाज दुःखों से मुक्त होकर जीवन से अधिकतम सम्भव खुशियाँ एवं आनन्द प्राप्त करना चाहता है। आपका जीवन आपके आसपास दूसरे लोगों के बुरे कार्यों से खतरे में पड़ सकता है। दूसरों की बेईमानी एवं दुर्व्यवहार से आपकी खुशियाँ एवं दुःख में बदल सकती हैं। निस्संदेह ऐसी अनेक घटनाओं के बारे में आप सोच सकते हैं। ऐसी बातें व्यक्ति के जीवन में सामर्थ्य को कम करती हैं और उसकी खुशियों में बाधा डालती हैं। आप दार्शनिक लोग दूसरे लोगों के लिये महत्वपूर्ण हैं। आपकी बातों पर लोग ध्यान देते हैं। आप उन्हें प्रभावित कर सकते हैं। दूसरों के सुख और दुःख आपके लिये महत्वपूर्ण हैं। एक बेहतर एवं सुखी जीवन जीने में आप उनकी मदद कर सकते हैं। कोई सुखी हो पायेगा इस बात की गारण्टी तो नहीं दी जा सकती, लेकिन उनके बेहतर जीवन एवं खुशियों की सम्भावनाएं अवश्य बढ़ाई जा सकती हैं। और उनके साथ ही, आपकी भी। कम कष्टप्रद एवं अधिक सुखमय जीवन का मार्ग दिखाने की क्षमता आप में है। दर्शन एक मार्ग है जो आपको एवं दूसरे लोगों को एक सुरक्षित एवं सुखमय जीवन की ओर ले जाता है। उत्तरदायित्व जीवन यापन की कला है। और दार्शनिक उत्तरदायित्व को अच्छी तरह से समझ सकते हैं एवं समझा भी सकते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि दुनिया में उद्देश्यहीन, सुस्ती एवं बोरियत का जीवन व्यतीत करने वालों से ज्यादा दुखी और कोई नहीं होगा।

संदर्भ :

1. एल. रॉन. हबर्ड : सुख का मार्ग
2. ए.पी. चौरसिया : अनप्रयुक्त नीतिशास्त्र